IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दूधनाथ सिंह का व्यक्तित्व एवं उनका साहित्य

*संवारी देवी

** डॉ. अनुराग मिश्र

एसोसिएट प्रोफेसर,

हिन्दी विभाग

का.सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय

अयोध्या, उ0प्र0

हिन्दी कथा साहित्य में अग्रणी लेखकों के पंक्ति में दूधनाथ सिंह का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है। कथा साहित्य में खासकर कहानी, उपन्यास, नाटक में उन्होंने अपने प्रतिभा का खास एहसास दिलाया है। उन्होंने निबंध, कविता, संस्मरण, अलोचना, पत्रकार आदि तमाम भूमिकाओं में सफलता हासिल की है। इसलिए दूधनाथ सिंह जी को बहु प्रतिभा के धनी माना जाता है।

दूधनाथ सिंह जी साहित्य के भूमिका के बारे में बड़े स्पष्ट है। उनका मानना है कि साहित्यकार की भूमिका आम आदमी के हित में होनी चाहिए। खासतौर पर जो व्यक्ति गाँव, कस्बा में रहता है और सब चिजों में पीछे है उनके दु:ख दर्द को समझने की कोशिश करनी चाहिए और उनके समर्थन में साहित्य के माध्यम से खड़ा होना चाहिए। दूधनाथ सिंह जी की यही भूमिका उनके साहित्य में हमें देखने को मिलती है।

एक व्यक्ति के रूप में दूधनाथ जी बड़े सरल, सह–हृदयी स्वभाव के है । इसलिए परिवार के साथ–साथ निजी सम्बन्धी और समाज में भी वे लोकप्रिय रहे है ।

पिता के रूप में : आज के दौर में एक आदर्श पिता बनना बहुत बड़ी खुबी मानी जाती है। कोई भी माँ–बाप को अपनी संताने बहुत प्रिय होती है। हर एक पिता अपनी संतानों के बारे में चिंतित रहते है। चाहे फिर उनका स्वास्थ्य के सम्बन्ध में हो या उनके कैरियर के सम्बन्ध में दूधनाथ जी अपनी संतानों को जी जान से चाहते है। इनके प्यार के बारे में रवीन्द्र कालिया लिखते है ''अगर मुझसे पूछा जाय कि दूधनाथ मूलरूप से क्या है, कथाकार, कवि, नाटककार अथवा समीक्षक तो कहूँगा मूलरूप से दूधनाथ पिता है, कवि कथाकार सब बाद में।''

इसी कारण दूधनाथ जी ने अपने संतानों का जीवन उज्ज्वल बनाने के लिए उन्हें एक गुरू के रूप में भी भूमिका निभानी पड़ी थी। जब उनके बेटों की परीक्षा का समय आता तो वह खुद नोट्स बनाकर बेटों को अध्ययन के लिए देते थे। इस संदर्भ में रवीन्द्र कालिया लिखते है ''बहुत से लेखक बच्चों को स्कूल तक छोड़ आते होंगे, ले भी आते होंगे, मगर ऐसे कितने होंगे, जो बच्चों को विज्ञान पढ़ाने के लिए विज्ञान पढ़ेंगे, गणित पढ़ाने के लिए गणित। किसी बच्चे की परीक्षा होगी तो दूधनाथ कुछ इस तरह व्यस्त हो जाएंगे, जैसे उसकी अपनी परीक्षा हो वह दोस्तों से मिलना छोड़ देगा. काफी हाउस में दिखाई न देगा, विश्वविद्यालय से छुट्टी लेगा जब तक बच्चा परीक्षा दे रहा होगा. दूधनाथ सिंह अगले पेपर के नोट्स तैयार कर रहा होगा।''

इतना ही नहीं उन्होंने पिता, गुरू साथ ही साथ माँ की भी भूमिका अदा की थी। जब उनका बेटा छात्रावास में रहता था तब लेखक ने खुद उनके कपड़े धुलवाकर दिए है। इस कार्य को देखकर गिरिराज किशोर को दुःख हुआ। इसके बारे में रवीन्द्र कालिया लिखते है– ''दूधनाथ को कपड़े पछाड़ते देख उन्हें बहुत तकलीफ होती इतने लड़के पढ़ते है आई.आई.टी. में ऐसा बाप मैने नहीं देखा। हर सप्ताह चला आयेगा बेटे के कपड़े धोने।'' इसी कारणवश हमें उनका पुत्रप्रेम दिखाई देता है। इस कार्य को देखकर रवीन्द्र कालिया लिखते है ''शायद यही कारण है कि, बेबी (अमिनेष) आज आई.पी.सी.एल में एक उच्च अधिकारी है और महज इक्कीस बरस की उमर में पिता के बराबर वेतन पा रहा है। दूधनाथ की बिटिया एम.बी.ए. का कोर्स करने के बाद वेतन में अपनी माँ से टक्कर ले रही है।''

सफल अध्यापक : दूधनाथ जी ने एम.ए. के बाद कुछ वर्षों तक जीविका के लिए ट्यूशन लिए छात्रों को पढ़ाया। दूधनाथ जी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में 26 वर्षों तक अध्यापन का कार्य किया। वे एक सफल अध्यापक रहे है।

सहज स्वभाव : अपरिचित से इतना परिचित व्यवहार करना की मानों सालों से उनकी पहचान है, यह दूधनाथ जी की सहज–स्वाभाविकता है। इस सम्बन्ध में निर्मला जी का मत है कि, ''यह बड़े भटकड़े है, भटके तो भटकते ही रहते है। जब तक की कोई उन्हें रास्ते पर लाता नहीं। किसी से भी किसी भी बात पर अच्छा संवाद करते है। सामने वाले का दिल जितने में उन्हें महारथ हासिल है।

मित्र–परिवार : दूधनाथ सिंह जी का स्वभाव सहज एवं सरल होने के कारण उनका मित्र परिवार काफी बड़ा है। हिन्दी के अनेक चोटी के कथाकार उनके घनिष्ठ मित्र रहे है। सुमित्रानंदन पंत तथा दूधनाथ सिंह जी के आत्मीय संबंध थे। इस सम्बन्ध में दूधनाथ जी स्पष्टीकरण देते है– ''इलाहाबाद के लेखकों में वे एक मात्र अकेले व्यक्ति थे, जो मेरी बीमारी में सेनेटोरियम (रसूलाबाद घाट पर स्थित) में मुझे देखने आये थे। जिस तरह पन्त जी आये थे. उस तरह वही आ सकते थे। एक अनहोनी घटना थी वहॉ उनका आना।''

लेखक दूधनाथ सिंह अपने मित्रों के बारे में सपाट चेहरे वाला आदमी के वक्तव्य में अपने मित्रों के बारे में तफसील के साथ बताया है– ''मैं इलाहाबाद में 1956 से हूँ। निराला जी जिस घर में रहते थे वह मेरी बुआ का था। मैं अक्सर बुआ के घर जाया करता था। वहीं उनसे परिचय हुआ। वे परिवार के सदस्य की तरह थे। सुमित्रानंदन पंत ने मुझे विश्वविद्यालय में नौकरी दिलायी, जबकि मेरा उनसे कोई खास परिचय नहीं था। उन दिनों लोग बहुत सहृदय हुआ करते थे। महादेवी वर्मा भी इलाहाबाद में रहती थी, लेकिन उनसे भी बहुत ज्यादा परिचय नहीं था। इस बीच मै बहुत बीमार हो गया और अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। मेरी पत्नी अकेली थी। तब उन्होंने सरकार को चिट्ठी लिखकर कि एक युवा लेखक गम्भीर रूप से बीमार है और उसकी मदद होनी चाहिए. मेरे लिए आर्थिक मदद माँगी। मेरी पत्नी तक उस सहयोग राशि को पहुँचाया। मेरा सौभाग्य है कि मैं हिन्दी के इन तीनों महान कवियों के सम्पर्क में आया। मेरी 'लौट आ ओ धार', 'निराला आत्महंता आस्था' और 'महादेवी' किताबें इन तीनों पर केन्द्रित है। यह एक तरह से इनकी कर्ज अदायगी की कोशिश है।

शमशेर बहादुर तथा सुरेन्द्रपाल भी इनके घनिष्ठ मित्र रहे है। इस संदर्भ में दूधनाथ सिंह जी लिखते है– ''2 नवम्बर, 1964 शाम चार बजे के आसपास । टी.बी. सेनेटोरियम रसूलाबाद बेड न. 37 शमशेर जी एकाएक सुरेन्द्रपाल के 1 साथ प्रकट हुए।''

इसके अलावा उनके और भी मित्र रहे हैं, जैसे– अमरकान्त, कमलेश्वर, मार्कण्डेय, ज्ञानरंजन, रवीन्द्र कालिया, भूवनेश्वर, नरेश मेहता, काशिनाथ सिंह, मलयज तथा डॉ. मुखर्जी आदि के साथ भी उनके आत्मीय तथा मित्रतापूर्ण सम्बन्ध रहे है। काशीनाथ सिंह के मित्रतापूर्ण सम्बन्ध के कारण ही वे एक–दूसरे के समधी बने। अस्पताल में भर्ती करवाते वक्त खुद मलयज उनके साथ थे। लेखक कहते है– ''मुझे एक तकिया दो।'' मैंने मलयज से कहा, जो भर्ती के वक्त मेरे सिहाने खड़े थे।''

इसी मित्र के स्नेह का नतीजा है कि दूधनाथ सिंह आज चोटी के लेखक के रूप में हमारे सामने है। दूधनाथ सिंह ने हाल ही (2014) में अपने मित्रों के कहानियों को सम्पादित कर चार बार आठ कहानियों का निर्माण किया है। जिसमें ज्ञानरंजन, रवीन्द्र कालिया, काशीनाथ सिंह के कहानियों का चित्रण है। इसमें दूधनाथ सिंह ने लिखा है कि हम यार है. अय्यार नहीं।''

लेखक के रूप में : दूधनाथ जी को लेखक बनाने में 57 से 60 तक के समय को महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इस दौरान उनकी काफी भागम–भाग हुई। उनका परिवार किसान परिवार था इसलिए उनके परिवार में लिखने–पढ़ने की परम्परा नहीं थी। बचपन से ही उन्हें अलग–अलग समस्याओं से गुजरना पड़ा था। आर्थिक, सामाजिक स्थितियों ने उनको लिखने को प्रेरित किया। उस समय समाज में चल रहे अनेक समस्याओं से प्रेरित होकर उन्होंने लिखना शुरु किया।

कहा सुनी में वह कहते है ''तो अनजाने ही मेरे लेखन की शुरुआत बदले की मनस्थिति से, चाहे वह बदला अपने से हो, अपनी असफलताओं से हो, अपने चारों तरफ के समाज द्वारा दी गई विडम्बनाओं और जो एक तरफ की आन्तरिक और बाहरी मार पड़ती रही। उससे सीधा का सीधा सबसे पहले बदले की भावना से प्रतिशोध की भावना से मैंने लेखन शुरु किया।''

सपाट चेहरे वाला आदमी में भी वह लेखन की शुरुआत किस प्रकार हुई है. इसके बारे में बताते है ''मेरे लेखन की शुरुआत किसी बाह्य प्रेरणा से नहीं हुई. एक अंतः प्रेरणा थी जिसने मुझे

लेखन की ओर मोड़ा। आजादी के बांद धीरे–धीरे परिवारों का टूटना, युवा वर्ग का शहरों की ओर पलायन और स्त्री–पुरुष संबंधों में खटास, ये सब मेरे लेखन की प्रारम्भिक चिंताएँ थी।''

दूधनाथ सिंह को लिखने की प्रेरणा इस समाज से मिली लेकिन लेखन की प्रतिभा को बढ़ाया सिर्फ तीन लोगों ने जिसके संदर्भ में दूधनाथ सिंह कहते है– ''जैसे किसी चीज का स्पर्श लोहे को सोना बना देता है वैसे ही इनके स्पर्श से मेरी लेखकीय प्रतिभा का विकास हुआ। लेकिन मैंने इनका तौर–तरीका नहीं अपनाया। ये तीनों कवि थे और मैंने कथा–लेखन से शुरुआत की। पर यह कह सकते है कि सुमित्रानंदन पंत महादेवी वर्मा और निराला के साथ इलाहाबाद शहर ने मुझे लेखक बनाया।''

आर्थिक सोच : दूधनाथ जी का आर्थिक दृष्टिकोण बड़ा स्पष्ट है। उनका मानना है कि गैर बराबरी दूर होनी चाहिए। जात–धर्म, आर्थिक, आत्मसम्मान उन सब दृष्टियों से हर आदमी को बराबर होना चाहिए।

महानगर में बड़ी–बड़ी हवेलियाँ है जो आकाश की ओर बढ़ते ही जा रही है, लेकिन इस हवेलियों के बनाने वाले मजदूरों का हाल दिन ब दिन बढ़ता ही जा रहा है। यह सब समाप्त होना चाहिए तभी इस देश में वास्तविक प्रजातंत्र हो सकता है।

उनका मानना है कि सभी जगह समानता होनी चाहिए। गरीबों को दबाकर राष्ट्र का विकास नहीं कर सकते, क्योंकि गरीब भी इस देश के हिस्सा है। इसलिए उनका मानना है कि जब तब आर्थिक विषमता समाप्त नहीं होती तब तक इस देश का हर नागरिक विकसित नहीं हो सकता।

राजनीतिक सोच : दूधनाथ सिंह जी पर वामपन्थी का प्रभाव है। वे इस संबंध में कहते है कि मैं कहूँगा कि मेरा झुकाव सही मायनों में वामपंथ की ओर है। मुझे आदमी की सही तकलीफों से लेना देना है– सिद्धांत से नहीं यही कारण है कि दूधनाथ जी के साहित्य में साम्यवाद की चर्चा है। इसलिए उनके साहित्य में जो भी पात्र है वे सभी पात्र वामपंथी से ही मेल खाते है।

साम्प्रदायिक सोच : दूधनाथ जी साम्प्रदायिकता के सख्त विरोधी है। देश की अखंडता को तोड़ने, ने का काम साम्प्रदायिक लोग करते है इसलिए इस साम्प्रदायिकता को रोकना चाहिए, उसे बढ़ावा नहीं

देना चाहिए। हिन्दुस्तान में हिन्दू लोग सबसे ज्यादा है, यही लोग साम्प्रदायिकता को उठाने का कार्य करते है।

दूधनाथ जी ने अपने उपन्यास 'आखिरी कलाम' में इन लोगों की निंदा की है। क्योंकि इन्हीं लोगों ने समाज का संतुलन बिगाड़ दिया था। साथ–ही–साथ साम्प्रदायिकता को बढ़ाने के लिए राजनीतिक पार्टीयॉ किस तरह मदद कर रही है, इसका भी चित्रण आखिरी कलाम में किया है। इसलिए बहुसंख्य लोगों से अल्पसंख्याकों के हित के लिए इसे रोकना होगा, यह काम किसी एक का नहीं है, हर पार्टी, दल, भारतीयों का है।

1– रवीन्द्र कालिया, सृजन के सहयात्री, पृ0 80।

2– वही, पृ0 77–78।

3– वही पृ0 78।

4– वही पृ0 78।

5– लौट आ ओ धार, दूधनाथ सिंह, पृ0 78।

6– सपाट चेहरे वाला आदमी, दूधनाथ सिंह, पृ. वक्तव्य से।

7– लौट आ ओ धार, दूधनाथ सिंह पृ0 15।

8– लौट आ ओ धार, दूधनाथ सिंह, पृ0 101।

9– चार यारः आठ कहानियॉ, दूधनाथ सिंह, पृ. परिचय से।

10– कहा सुनी, दूधनाथ सिंह, पृ. 28।

11– सपाट चेहरे वाला आदमी, दूधनाथ सिंह, पृ. वक्तव्य से।

12– सपाट चेहरे वाला आदमी, दूधनाथ सिंह, पृ. वक्तव्य से।